भारतीय चित्रकला का समसामयिक परिदृश्य

मंजू यादव
शोध छात्रा
दृश्य कला विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

यह सार्वभौमिक सत्य है कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है। यह परिवर्तन संसार को एक नया आयाम प्रदान करता है। प्रकृति में होने वाले अनेक प्रकार के परिवर्तनों का प्रभाव मानवों पर पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार का हो सकता है। कलाकार इन्हीं प्रभावों से प्रेरित होकर अपनी वैचारिक एवं बौद्धिक क्षमताओं का सहारा लेते हुए आधुनिक तकनीकों एवं माध्यमों के आधार पर अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है। कलाकार अपनी इस अभिव्यक्ति के द्वारा तत्कालीन समाज की दशा एवं दिशा को समाज के सम्मुख रखता है।

यदि भारतीय चित्रकला का समसामयिक परिदृश्य देखा जाए तो भारत की समसामयिक चित्रकला में आज नकारात्मक प्रभाव ज्यादा हावी दिखाई देने लगा है। या यूँ कहा जा सकता है कि आज का समाज नकारात्मक प्रवृत्तियों से भरा हुआ है। शायद इसीलिए कलाकारों की कृतियों में भी नकारात्मक प्रभाव ज्यादा हावी होने लगे हैं। आज के कलाकार समाज के प्रत्येक पक्ष–दैनिक जीवन, राजनीतिक जीवन, आर्थिक जीवन, धार्मिक जीवन, पारम्परिक एवं सांस्कृतिक जीवन आदि की समस्याओं से प्रभावित होकर उनकी अभिव्यक्ति कर रहे हैं। आज ज्यादातर चित्राकृतियों में अराजकता, कौतूहलता, नृशंसता, गरीबी, भूखमरी आदि से ग्रसित समाज की स्थिति दिखाई दे रही है। यदि समकालीन चित्रकारों की कृतियों की बात की जाए तो इस प्रकार की स्थिति अर्पणा कौर, गोगी सरोज पाल, मंजीत बावा आदि की चित्राकृतियों में दर्शनीय हैं, जो सामाजिक विकृतियों को प्रस्तुत कर रहीं हैं।[1]

दूसरे शब्दों में कहा जाए तो समसामयिक चित्रकला हमारे वर्तमान जीवन को प्रतिबिम्बित करती है। यहाँ तक कि इसका विकास भी हमारे दैनिक जीवन के अनुभवों एवं घटनाओं पर ही आधरित देखा जा रहा है। आज का कलाकार अपने प्रकृति एवं समाज के दैनिक जीवन में हो रही घटनाओं से काफी प्रभावित हो रहा है। यहाँ तक कि छोटी से छोटी चीजों जैसे–पुस्तकों, समाचार पत्रों, कपड़ों, टेबल, कुर्सी, माचिस आदि महत्वहीन वस्तुओं को भी अपनी सृजनात्मक कल्पना से सुन्दर बना देता है। इसी तरह आधुनिक जीवन के अनेक अनुभवों (जो उसके मस्तिष्क पर अनेक विचार एवं उथल–पुथल मचाते हैं) से प्रेरित होकर जब वह सृजन करता है तो नए आकारों की उत्पत्ति होती है। इस आधुनिक जीवन की विविधता व गति ने कलाकार को अमूर्तन की तरह बढ़ने के लिए एवं नए रूपाकारों को सृजित करने के लिए प्रेरित किया।[2]

हालांकि समसामयिक चित्रकला में आज अमूर्तन, दूसरे शब्दों में कहें तो विरूपण अथवा अतिश्योक्ति का प्रयोग ज्यादातर देखा जाने लगा है। आज विरूपण एक आधुनिक ट्रेण्ड बन गया है। हालांकि बिना सरलता को अपनाए तथा अनुभूत दृश्यता में कुछ हद तक विरूपण लाए बिना गहनता को नहीं पाया जा सकता

[1] समकालीन कला, ज्योतिष जोशी, ललित कला अकादेमी प्रकाशन, नई दिल्ली, अंक 48, फरवरी 2016, पृ सं 72
[2] समकालीन कला, ज्योतिष जोशी, ललित कला अकादेमी प्रकाशन, नई दिल्ली, अंक 49, पृ सं 71

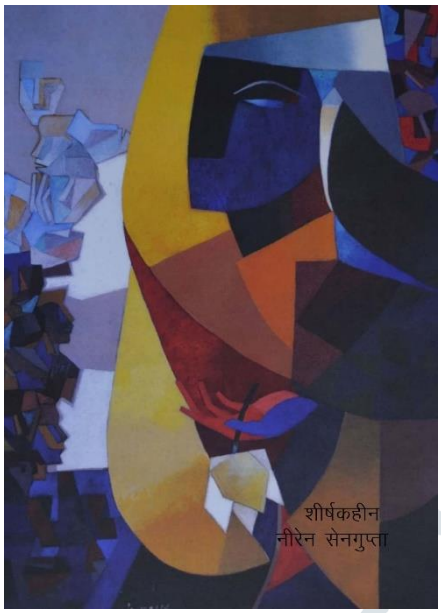

है।[3] लेकिन केवल इसे एक लोकप्रिय प्रवृत्ति एवं आधुनिक कलाकार का टैग लगाने के लिए प्रयोग करना गलत है। चित्रकारों को इस प्रवृत्ति के पीछे छिपे विचारों को समझाना होगा।

समसामयिक चित्रकला के तत्कालीन परिवेश में आज प्रयोगवादी प्रवृत्तियाँ चित्रकारों पर काफी हावी है, जो उनके कलाकृतियों में स्पष्ट नजर आती हैं। तत्कालीन आधुनिक चित्रकला ने चित्रकारों को व्यक्तिगत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी है तो यह भी सत्य है कि प्रत्येक चित्रकार एक ही तरह के विचारों पर आधरित चित्र नही बना सकता और यहीं से चित्रकला में प्रयोगवाद आरम्भ हो गया। प्रत्येक चित्रकार अपनी–अपनी इच्छानुसार नये–नये तरीकों से नये–नये रंगों से नये–नये चित्र बनाना आरम्भ किया और यहीं से चित्रकला में अनेक वादों का उद्भव होना शुरू हुआ। जो आज तक प्रचलन में है। इसी प्रकार आज का कलाकार प्राचीन रूढ़िवादी परम्पराओं एवं शैलियों से पूर्णतया मुक्त है, उसे विषय–वस्तु से लेकर शैली, माध्यम, तकनीक एवं विचारों के अभिव्यक्ति तक की स्वतन्त्रता है, जिसका उपयोग कर वह नित्य नए–नए रूपाकारों का सृजन कर रहा है। हालांकि आधुनिक कलाकारों द्वारा सृजित किये गये रूपाकारों का कला मर्मज्ञों द्वारा विरोध किया गया। उनकी चित्राकृतियों के विषय–वस्तु एवं रूपाकारों की यह कह कर आलोचना की गई कि– लगता है कि आधुनिक कलाकारों की सोच यह है कि चीड़–फाड़ से पहले मरना जरूरी है। उनकी चित्राकृतियों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि वैज्ञानिक हठधर्मिता के कारण मानवता की बलि चढ़ा दी गई है।[4] आज वैज्ञानिक तकनीकि एवं माध्यम चित्रकला पर पूर्णतया हावी है। रूपाकारों सम्बन्धी समस्याओं पर इतना अधिक ध्यान दिया जाने लगा है कि कलाकृतियाँ प्रयोगशाला के अनुभवों पर आधारित होती हुई प्रतीत होती है।[५] इसके अतिरिक्त आज की चित्राकृतियों में कलाकार का वैचारिक एवं बौद्धिक दृष्टिकोण इतना ज्यादा प्रबल होता दिखायी देने लगा है कि, चित्राकृतियाँ आम दर्शकों के समझ से परे की विषय हो गयी हैं। जिससे आज की कला में सम्प्रेषण की समस्या भी आने लगी है।

उपरोक्त प्रवृत्तियों के अतिरिक्त समसामयिक चित्रकला परिदृश्य में जो प्रवृत्ति दिखायी दे रही है वह है– पश्चिमी शैलियों का प्रभाव। आज ज्यादातर ऐसे कलाकार हैं, जो पश्चिमी कलाकारों की शैलियों से प्रभावित होकर चित्राकृतियाँ सृजित कर रहे हैं। उन पर पश्चिम की 'नकल' का आरोप लग रहा है। मेंरे विचार से पश्चिमी शैलियों को अपनाना गलत नही है, किन्तु अपनी परम्परा एवं संस्कृति से बिल्कुल कटकर पश्चिम का अन्धाधुन्ध अनुकरण करना गलत है। अपनी परम्परागत शैलियों के साथ–साथ यदि पश्चिमी शैलियों का समन्वय किया जाए (जो अनुकरणीय हो) तो यह बहुत ही अच्छा रहेगा। क्योंकि केवल परम्सागत रूढ़िवादिता के कारण यदि पश्चिमी शैली का जो अच्छा या अनुकरणीय है, उसे भी न अपनाया जाय, तो शायद यह गलत ही होगा। चूँकि आज कलाओं में भी अन्य क्षेत्रों की तरह वैश्वीकरण हुआ है। इस वैश्वीकरण के दौर में आज भारतीय कलाकार भी अनेक देशों की कला शैलियों, पद्धतियों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाए हैं। केवल भारतीय कलाकार ही नहीं बल्कि विश्व के सभी देशों के कलाकार एक–दूसरे देश की शैली, पद्धति, परम्परा से प्रभावित हो रहे हैं। वैश्वीकरण ने दुनिया को बहुत छोटा बना दिया है। आज चित्रकला में ही नहीं, बल्कि मिक्स मीडिया, फोटोग्राफी, इन्स्टालेशन आदि माध्यमों में भी इसका प्रभाव देखने को मिल रहा है। आज जो कुछ पश्चिम में बनाया जा रहा है, वही पूर्वी देशों में भी बनाया जा रहा है और पूर्वी देशों में जो बनाया जा रहा है, वही पश्चिम में बन रहा है।

[3] भारत की समकालीन कला% एक परिप्रेक्ष्य, प्राणनाथ मागों, प्रकाशन–नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, दूसरी आवृत्ति 2011, पृ सं 196

[4] आधुनिक चित्रकला, प्रो॰ रामचन्द्र शुक्ल, साहित्य संगम प्रकाशन,इलाहाबाद एवं भारत की समकालीन कला% एक परिप्रेक्ष्य, प्राणनाथ मागों, प्रकाशन–नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, दूसरी आवृत्ति 2011, पृ सं 11

वैश्विकरण के इस दौर में कला बाजार ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। कला के वैश्विकरण में कला बाजार महत्वपूर्ण कारक बन कर उभरा है। आज कला बाजार की मांग के अनुसार कला की अपनी संस्कृति (विषय–वस्तु) बन गयी है, जिससे कलाकृतियों के दाम अचानक बढ़ गये हैं। आज बाजार ने कला का एक नया आयाम स्थापित किया है। इसको विश्व स्तर पर एक पहचान दिलायी है। जिससे विदेशी कलाकारों की कृतियों की तरह ही अब भारतीय चित्रकारों की कृतियाँ भी लाखों –करोड़ों में बिकने लगी हैं। आज समकालीनता ,उसकी बाजारी प्रवृत्तियाँ, कला बाजार तय कर रहा है। वह विचार, माध्यम और तकनीकी में हो रहे अधुनातन परिवर्तनों, प्रयोग धर्मिताओं की बजाय यह बताने में ज्यादा रूचि लेता है कि कौन से कलाकार ने कीमतों का रिकार्ड तोड़ा है। आज सेंसेक्स की तरह कलाकृतियों के मूल्य तेजी से ऊपर–नीचे हो रहें हैं।[5] वर्तमान भारत का कला बाजार परिदृश्य एवं कला बाजार विशेषकर महानगरों में ही स्थापित हो गया है। जहाँ उसने अपने अनुकूल एक वातावरण बना लिया है। आज बाजार के इर्द–गिर्द ज्यादातर युवा कलाकार नजर आ रहें हैं। बाजार इनको अपनी ओर आकर्षित किये हुए है। क्योंकि बाजार की मांग के अनुसार चित्राकृतियों का सृजन एवं उनकी आपूर्ति करनें में ये सक्षम हैं। भारत की समसामयिक कला बाजार आर्थिक परिवर्तनों, खुली आर्थिक नीतियों तथा निजी क्षेत्र के विकास के कारण पनप सका है। चित्राकृतियों के बाजारोन्मुख होने में ऑर्ट गैलरियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ऑर्ट गैलरियों की संख्या में आज बहुत अधिक वृद्धि हुई है और कलाकृतियाँ अविश्वसनीय रूप से ऊँचे दामों में बिक रही हैं। हालांकि कलाकृतियों के खरीद के पीछे अटकलबाजी ज्यादा है, क्योकि अभी तक कलाकृतियों की गुणवत्ता को मापने का कोई निश्चित पैमाना नही बना है। लेकिन फिर भी कलाकृतियों को बाजार तक ले जाने का श्रेय ऑर्ट गैलरियों को भी है। इसमें दो अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं का भी योगदान रहा है–अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध नीलाम घरों द्वारा कला की नीलामी का, जिसमें से पहली नीलामी मुम्बई में क्रिस्टीज द्वारा सम्पन्न कराई गई थी तथा दूसरी नीलामी 1992 में दिल्ली में सुदबीज द्वारा कराई गई थी।[6] इसके बाद नीलामियों का सिलसिला शुरू हो गया, जों भारत में आज तक होता आ रहा है और आज समसामयिक चित्रकला परिवेश की यह प्रवृत्ति बन गयी है कि यहीं ऑर्ट गैलरियाँ और कला बाजार कलाकार की योग्यता का निर्धारण कर रहें हैं।

हालांकि भारतीय कला को बाजार में आने से कलाकारों को काफी हद तक आर्थिक सहयोग भी मिलने लगा है। जिससें अब बेरोजगारी सम्बन्धी समस्या से कलाकारों को निजात मिल गया है। लेकिन दूसरी तरफ कला बाजार ने चित्राकृतियों की गुणवत्ता को बहुत नुकसान पहुँचाया है। इसने कलाकारों की स्वच्छन्द अभिव्यक्ति का भी ह्रास किया है।

फिर भी भारतीय समसामयिक चित्रकला के संदर्भ में यह कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नही होगा कि 21वीं शताब्दी ने भारतीय चित्रकला जगत को जितने भी नवीन स्वरूप (तकनीकी, माध्यम, शैलियाँ आदि) प्रदान करने के साथ–साथ आकृतियों को निरूपित करने की स्वतंत्रता प्रदान की है, यह आज से पहले कभी नही देखी गयी थी। आज चित्रकार अपनी भावों की अभिव्यजना करने के लिये पूर्णतया स्वतंत्र है। इस संदर्भ में प्रो॰ रामचन्द्र शुक्ल की पुस्तक ''आधुनिक चित्रकला'' में कला मर्मज्ञ शेल्डन चेनी ने भी कहा है–''प्रत्येक साहित्यकार, कवि या लेखक अपनी अनुभूतियों को 'विशिष्ट अनुभूतियों को' अपनी रचना के माध्यम से व्यक्त करने के लिये स्वतंत्रता चाहता है। उसी प्रकार आज का चित्रकार अपनी 'विशिष्ट अनुभूति', अपनी रूचि या अपनी धारणा तथा संदेश स्वच्छन्दता के साथ व्यक्त करने को उद्यत है। पहले वह समकालीन साहित्य, धार्मिक प्रचलन, तथा राजकीय रूचियों का आधार लेकर चित्रण करता था, आज वह इस बंधन से मुक्त होकर अपनी व्यक्तिगत अनुभूति को, जिसे उसने अपने जीवन तथा समाज के साहचर्य से प्राप्त किया है, व्यक्त करने के लिये, स्वच्छन्द होने के लिये क्रान्ति कर रहा है। यही कारण है जो आधुनिक चित्रकला में विचित्र शैलियाँ, टेक्नीक तथा अभिव्यक्तियाँ सामने आ रही हैं। यह समसामयिक आधुनिक कला की विशेषता है। चित्रकार आज अपने विशिष्ट रूचि के आधार पर नये रूप, रंग तथा आकार प्रदर्शित करने के लिये प्रयत्नशील है।''आज भारतीय चित्रकला में पारम्परिक मान्यताओं ,रूढ़ियों का कोई बन्धन नही है। कुछ रचनात्मक सृजन करने के लिये, अपने भावों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति करने

[5] समकालीन कला, ज्योतिष जोशी, ललित कला अकादेमी प्रकाशन, नई दिल्ली, अंक 40–41, नवम्बर 2009, फरवरी 2010, मार्च–जून 2010 पृ सं 47
[6] भारत की समकालीन कला% एक परिप्रेक्ष्य, प्राणनाथ मागों, प्रकाशन–नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, दूसरी आवृत्ति 2011, पृ सं 205

के लिये, अपनें अनुकूल तकनीकों, माध्यमों एवं शैलियों का प्रयोग वर्तमान कला का मूल आधार है। आज कला किसी राष्ट्र व व्यक्ति से न बंधकर अपना अन्तर्राष्ट्रीय रूप धारण कर चुकी है। जो उसकी स्वतंत्र प्रवृत्ति एवं व्यापकता का सूचक है।

संदर्भ

1– समकालीन कला, ज्योतिष जोशी, ललित कला अकादेमी प्रकाशन, नई दिल्ली, अंक 48, फरवरी 2016, पृ सं 72
2– समकालीन कला, ज्योतिष जोशी, ललित कला अकादेमी प्रकाशन, नई दिल्ली, अंक 49, पृ सं 71
3– भारत की समकालीन कला% एक परिप्रेक्ष्य, प्राणनाथ मागों, प्रकाशन–नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, दूसरी आवृत्ति 2011
4– शोध निधि –ललित कलाओं की त्रैमासिक शोध पत्रिका, अक्टूबर 2009 से जून 2009, पृ सं 74
5– समकालीन कला, ज्योतिष जोशी, ललित कला अकादेमी प्रकाशन, नई दिल्ली, अंक 46–47, 2015
6– आधुनिक चित्रकला , प्रो॰ रामचन्द्र शुक्ल, साहित्य संगम प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2006